Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
August 2024
ISSN 2229-3388

Eastern Caribbean Region: Empowring Blue Economy

पूर्वी कैरिबियाई क्षेत्र : नीली अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना

डॉ० विनोद कुमार

1ए सीनियर एकेडमिक रिसर्च, पोस्ट डॉक्टोरेट, पीएच० डी० एम० फिल० यू० जी० सी० नेट एवं व्याख्याता राजनीति विज्ञान विभाग राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़।

संक्षेपिका : वैश्विक स्तर पर समुद्र से जुडी आर्थिक गतिविधियों में नीली अर्थव्यवस्था की अवधारणा बड़े व्यापक स्तर पर उभर रही है क्योंकि यह अवधारणा सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखी जा रही है। विश्व स्तर पर कई क्षेत्रों ने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर इस अवधारणा को अपनाया है जिनमें कैरेबियन का पूर्वी क्षेत्र भी शामिल है। नीली अर्थव्यवस्था की जटिल, बहुक्षेत्रीय, बहुस्तरीय प्रकृति को देखते हुए कहा जा सकता है कि विभिन्न क्षेत्रों के लिए अलग–अलग दृष्टिकोणों की आवश्यकता होती है। इसलिए यह लेख पूर्वी कैरिबियाई क्षेत्र की नीली अर्थव्यवस्था के अवसरों, खतरों, जोखिमों तथा उन विचारणीय बिन्दुओं का समीक्षात्मक विश्लेषण करता है जिसके माध्यम से इस क्षेत्र की अर्थव्यवाया को और अधिक सुदृढ बनाया जा सके। इस क्षेत्र को सशक्त करने के लिए कई राजनीतिक पहल की गई हैं। जैसे अनलीशिंग द ब्लू इकोनामी ऑफ द कैरिबियन। यह 15 वर्षीय क्षेत्रीय साझेदारी ग्रेनाडा, सेंट लुसिया और सेंट विंसेंट और ग्रेनाइड ग्रेनाडाइन्स जैसे देशों में समुद्री संसाधनों की क्षमता को उजागर करके सतत आर्थिक विकास को बढावा देने, आजीविका में सुधार करने और रोजगार सृजित करने का लक्ष्य रखती है।

संकेताक्षर : पूर्वी कैरिबियन क्षेत्र, नीली अर्थव्यवस्था, जैव विविधता, समुद्री शिक्षा, समुद्री कृषि, मत्स्य पालन, सतत विकास

परिचयः कैरिबियन क्षेत्र को विश्व की सबसे अधिक जैव विविधता वाले क्षेत्रों में से एक माना जाता है। इस क्षेत्र के लोगों में समुद्री क्षेत्रों के प्रति जागरूकता बढ़ रही है? जिनके अन्दर प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं, जिनमें समृद्ध जैव विविधता, समुद्री और स्थलीय दोनों प्रकार के जीव जन्तुओं, खनीज तथा निर्जीव संसाधन शामिल हैं संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून के अनुसार पूर्वी कैरिबियन राज्यों के संगठन का समुद्री क्षेत्र, भूमि क्षेत्र की तुलना में कई गुना अधिक है।[1] यद्यपि पूर्वी केरेबियन राज्यों के संगठन ने जल क्षेत्र और उससे जुड़े जीव–जंतुओं एंव निर्जीव संसाधनों पर कानून द्वारा अधिकार क्षेत्र स्थापित किया है, फिर भी इससे प्राप्त होने वाले लाभों का पूर्ण उपयोग नहीं हो पा रहा है और अनेक संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है। समुद्री संसाधनों का अपर्याप्त संसाधन प्रबंधन से लम्बे समय से दोहन एवं उपयोग से इसके महत्वपूर्ण एच संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्रों का क्षरण हुआ है। इस प्रकार के क्षरण के पीछे प्रमुख कारण खराब और अव्यवस्थित योजनाबद्ध तटीय और शहरी विकास, अस्थिर पर्यटन, भूमि और समुद्री प्रदूषण के स्रोत, जीव जन्तुओं का अधिक दोहन, प्रमुख प्रजातियों का विलुप्त होना और आक्रामक प्रजातियों का प्रसार आदि रहे हैं।[2] यदि पूर्वी कैरिबियन क्षेत्र को महासागरों और इसके संसाधनों का उपयोग सामूहिक रूप से आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ प्राप्त करना है. तथा इस क्षेत्र का पर्यावरण संरक्षित करना है तो समुद्री अर्थव्यवस्था अर्थात् नीली अर्थव्यवस्था संबन्धी विचारों पर सावधानीपूर्वक विचार–विमर्श, बातचीत और आन्तरिक तथा राजनीतिक रूप से समाधान करने की आवश्यकता है।

नीली अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति तथा परिभाषाएं

नीली अर्थव्यवस्था की अवधारणा बेल्जियम के अर्थशास्त्री गुंटर पाऊली द्वारा 1994 में जापान में आयोजित होने वाले कॉप – 3 की तैयारी के लिए संयुक्त राष्ट्र के अनुरोध के जवाब में तैयार की गई जहां 1997 में क्योटो प्रोटोकोल पर निर्णय लिया गया था। नीली अर्थव्यवस्था एक ऐसी अवधारणा है जो टिकाऊ समुद्री और जल–आधारित आर्थिक गतिविधियों को देती है, यह महासागरों, समुद्रों और तटीय क्षेत्रों को अप्पार आर्थिक क्षमता वाले संसाधनों के रूप में देखती है इसका मुख्य उद्देश्य टिकाऊ प्रथाओं पर ध्यान केन्द्रित करना है जो विकास को गति प्रदान करें और समुद्र पारिस्थितिक तंत्रों की

रक्षा करें। इसमें मच्छली पकड़ना, जहाजरानी, पर्यटन और समुद्री जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र शामिल हैं, जिनका लक्ष्य आर्थिक लाभ और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना है[3] यद्यपि नीली अर्थव्यवस्था की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। एस. स्मिथ–गॉडफ्रे का मानना है कि, नीली अर्थव्यवस्था सभी के लाभ के लिए महासागरों का सतत औद्योगीकरण है।[4] विश्व बैंक के अनुसार समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को संरक्षित करते हुए आर्थिक विकास, बेहतर आजीविका और रोजगार के लिए समुद्री संसाधनों का सतत उपयोग है।[5] अगर यूरोपीय आयोग का विचार जाने तो पता चलता है कि यह संगठन इसे व्यापक रूप से महासागरों, समुद्री तटों तथा इससे संबन्धित सभी प्रकार की आर्थिक गतिविधियों के रूप में परिभाषित करता है, जिसमें स्थापित तथा उभरते हुए दोनों क्षेत्र शामिल हैं।[6] संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, "यह एक ऐसा ढांचा है जो आर्थिक विकास को आजीविका के संरक्षण और सुधार के साथ जोड़ता है। जिससे सामाजिक समावेश और पर्यावरणीय स्थिरता दोनों सुनिश्चित होती है।[7] अर्थात् संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों ने नीली अर्थव्यवस्था को एक ऐसी अर्थव्यवस्था के रूप में परिभाषित किया है जो आर्थिक क्षेत्रों और संबन्धित नीतियों की एक श्रृंखला को समाहित करती है जो मिलकर यह निधारित करती है कि समुद्री संसाधनों का उपयोग टिकाऊ है कि नहीं। राष्ट्रमंडल इसे एक उभरती हुई अवधारणा मानता है जो हमारे महासागर या नीलें संसाधनों के बेहत्तर प्रबंधन को प्रोत्साहित करती है।[8] कंजरवेशन, इन्टरनेशनल का कहना है कि "नीली अर्थव्यवस्था में ऐसे आर्थिक लाभ भी शामिल हैं, जिनका विपणन नहीं किया जा सकता है, जैसे कार्बन भंडारण तटीय संरक्षण, सांस्कृतिक मूल्य और जैव विविधता"[9] जबकि नीली अर्थव्यवस्था केन्द्र इस संदर्भ में व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए बताता है कि नीली अर्थव्यवस्था शब्द संपूर्ण विश्व में व्यापक रूप से प्रयोग होता है यह शब्द तीन अलग–अलग रूपों में प्रयोग होता है परन्तु तीनों का अर्थ भिन्न है जैसे– अर्थव्यवस्थाओं में महासागरों का समग्र योगदान, महासागरों की पर्यावरणीय और पारिस्थितक स्थिरता को संबोधित करने की आवश्यकता और विकसित और विकाशील दोनों देशों के लिए विकास के अवसर के रूप में महासागर अर्थव्यवस्था।[10] जबकि लारेंस ने नीली अर्थव्यवस्था को व्यापक संदर्भों में परिभाषित किया है। उनके अनुसार ९ महासागर इस समय आर्थिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रो में से एक है लगभग संपूर्ण विश्व में व्यापार जहाजों द्वारा ही होता है। यहां अपटटीय तेल और गैस के भंडार हैं? साथ ही गहरे समुद्र में खनन भी होता है। जैसे–जैसे हम प्रौद्योगिकी में नवाचार करते हैं, हम उन स्थानों तक पहुंचने और उसका दोहन करने में सक्षम होते हैं जहाँ हम पहले नहीं पहुंच पाते थे। पृथ्वी को भोजन उपलब्ध कराने, स्वच्छ उर्जा प्रदान करने और रोजगार सृजित करने के लिए महासागरों में अपार क्षमता है इसी को हम नीली अर्थव्यवस्था कह सकते हैं"[11]

नीली अर्थव्यवस्था के विभिन्न तत्व

नीली अर्थव्यवस्था को संचालित एवं प्रभावित करने वाले अनेक तत्व पाए जाते हैं, ये तत्व समुद्री पारिस्थितक, तंत्रों के संरक्षण तथा आर्थिक विकास में भी योगदान करते हैं ये निम्नलिखित है।

- मत्स्य पालन और जलीय कृषि।
- समुद्री परिवहन।
- तटीय पर्यटन एवं आतिथ्य।
- अपतटीय नवीकरणीय उर्जा।
- समुद्री जैव प्रौद्योगिकी।
- समुद्री और तटीय अवसंरचना।
- जहाजरानी और बंदरगाह।

- महासागर अनवेशष और अनुसंधान।
- जलमग्न खनन।
- समुद्री संरक्षण और जल क्रिडा और मनोरंजन।
- विलवणीयकरण और जल प्रबंधन।
- समुद्री नवीकरणीय संसाधन।
- जहाज निर्माण और मरम्मत।
- महासागरीय शिक्षा और प्रशिक्षण।
- समुद्री प्रदुषण नियंत्रण।
- तटीय क्षेत्र प्रबंधन।
- महासागरीय शासन और नीति ।
- समुद्री बीमा और वित्त।
- सतत समुद्री खाद्य उत्पादन।
- समूद्री प्रौद्योगिकी और नवाचार।
- बंदरगाह और रसद
- क्रूज पर्यटन।[12]

कैरिबियाई क्षेत्र की नीली अर्थव्यवस्था को बढावा देने के लिए विभिन्न परियोजनाएं एवं रणनीतिक पहल।

कैरिबियन क्षेत्र की नीली अर्थव्यवस्था अपने आप में एक विकासात्मक गतिविधियों का स्र्वोत्तम उदाहरण है, विशेषकर खाडी देशों ने कैरिबियाई देशों से इस संदर्भ में अनेक सबक प्राप्त किए हैं जिससे खाडी देशों ने समुद्री अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए पहल एवं परियोजनाएं प्रारम्भ की हैं। कैरिबियन क्षेत्र में नीली अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए मुख्य रूप से टिकाऊ मत्स्य पालन, समुद्री पर्यटन, अपवतीय नवीकरणीय उर्जा और अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। इस संदर्भ में कई महत्वपूर्ण पहले तथा कदम उठाए गए हैं जो इस प्रकार हैं।

कैरेबियन ब्लू फाइनेंसिंग : यह परियोजना कैरेबियन जैव विविधता कोष द्वारा चलाई जा रही है। जो नीले कार्बन बाजारों और जैब विविधता वित्त उपकरणों के माध्यम से प्रकृति आधारित नीली अर्थव्यवस्था के अनेक अवसरों को मजबूत करती है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के माध्यम से वैश्विक पर्यावरण सुविधा द्वारा 6 मिलियन अमेरिकी डालर की धनराशि से वित्त पोषित कैरिबियन नीली परियोजना को कैरिबियन जैव विविधता कोष द्वारा चार वर्षों में कार्यान्वित किया जाएगा। इस परियोजना से लाभार्थी देशों में सेंट लुसिया सेंट विंसेंट और ग्रेनाडीन्स, ग्रेनाडा, डोमिनिकन गणराज्य और बहामास शामिल हैं।

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
August 2024
ISSN 2229-3388

ब्लू बान्ड्स : ब्लू बॉन्ड सरकारों, विकास बैंको और निगमों द्वारा जारी किए गए श्रण साधन है जिसका उदेश्य विशेष रूप से समुद्री और महासागर–आधारित सतत विकास परियोजनाओं के लिए पूंजी जुटाना है कैरेबियन क्षेत्र के कई छोटे द्वीप देश जैसे बारबाडोस और बेलीज भारी विदेशी कर्ज के बोझ तले दबे हुए हैं, जिसके कारण वे अपने विशाल समुद्री क्षेत्र की रक्षा नहीं कर पाते हैं इस समस्या का समाधान करने के लिए ब्लू बॉन्ड एक अनोखे तरीके से काम करता है। बोरबाडोस का कुल समुद्री क्षेत्र एक विशाल, कोल के आकार का जलक्षेत्र है जो पश्चिम में कैरिबियन सागर और पूर्व में 200 समुद्री मील तक अटलांटिक महासागर में फैला हुआ है इसमें जटिल मार्लिन, माही–माही और टूना जैसी प्रवासी प्रजातियों का घर है। शील कहते हैं कि इस देश दारा अपने समुद्री क्षेत्र के सतत प्रबंधन के लिए प्रतिबद्धता दिखाना निश्चित रूप से उत्साहजनक है परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि यह योजना पानी में लकीरें खींचती है। इसी प्रकार पैट्रिक मैककोनी कहते हैं कि "इस पहल का उदेश्य परस्पर अनुकूल एवं उपयोगी और ऐसी नीति तैयार करने के बारे में है जिसमें यहां हित रखने वाले सभी क्षेत्रों को शामिल किया जाए। और कई अर्थों में, यह प्रयास इस बात पर व्यापक चर्चा के लिए एक मंच प्रदान करेगा कि भविष्य में बारबाडियन लोगों के लिए महासागर के महत्व के सभी विभिन्न पहलुओं को कैसे बनाए रखा जाए।

क्षेत्रीय विकास और आजीविका परियोजनाएः विश्व बैंक, और वैश्विक पर्यावरण सुविधा द्वारा समर्थित, यह पहलू देश को समुद्री शासन और तटीय भू–स्थानिक नियोजन में सुधार करने में मदद करती है। ताकि इस क्षेत्र के लोगों का जीवन स्तर उपर उठ सके और सभी इस परियोजना से लाभान्वित होकर के अपने देश के आर्थिक विकास में योगदान दे सकें।[13]

नीली अर्थव्यवस्था की ओर कैरिबियन क्षेत्र में टिकाऊ विकास का वादाः इस प्रतिवेदन के अनुसार वर्ष 2012 में कैरिबियन जल क्षेत्र से 407 अरब अमेरिकी डालर का राजस्व प्राप्त हुआ, जो मुख्य रूप से भूमि देशों सहित कैरिबियन के सकल घरेलू उत्पाद के 17 प्रतिशत से अधिक है। यह राशि मुख्य रूप से कैरिबियन जलक्षेत्र से माल ढुलाई, पर्यटन और तेल एवं गैस उत्पादन से प्राप्त होती है। सोफी सिरटेन का मानना है कि "यह रिपोर्ट कैरिबियन की नीली अर्थव्यवस्था द्वारा प्रदान किए गए अवसरों पर प्रकाश डालती है और कार्यवाही के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करती है जो सभी कैरिबियन लोगों के लिए नीली अर्थव्यवस्था के विकास और अवसरों को उत्पन्न कर सकते हैं, साथ ही यह सुनिश्चित करते हैं कि महासागरों और समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों का स्थाई रूप से प्रबंधन और उपयोग किया जाए" निश्चित रूप से इस प्रतिवेदन की सिफारिशों में टिकाऊ मत्स्य पालन और जलीय कृषि को बढावा देन के लिए पर्यावरण लेबलय; अपतटीय पवन उर्जा और अन्य समुद्री नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियां, और पर्यावरण के अनुकूल तटीय होटल शामिल हैं। पूर्वी कैरिबियाई क्षेत्र में, ग्रेनाडा पहला देश है जिसने अपने भविष्य के लिए नीली उर्जा के विकास की परिकल्पना की है और जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध लड़ाई में अग्रणी बन गया है। ग्रेनाडा मसाला दीप के नाम से भी जाना जाता है। यह छोटा सा देश अमेरिका और पडौसी मार्टिनिक को उच्च मूल्य वाले समुद्री भोजन का निर्यात करने में सफल रहा है। इस प्रतिवेदन के प्रमुख सुझाव निम्नलिखित है

(क) मत्स्य, पालन, पर्यटन, परिवहन, उर्जा और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में तटीय और समुद्री प्रबंधन के बेहतर समन्वय और निगरानी के लिए क्षेत्रीय और राष्ट्रीय नीतियों को मजबूत करना आवश्यक है।

(ख) स्वस्थ, लचीले उत्पादक और समुद्री पर्यावरण को बढ़ावा देने के साथ–साथ लचीले बुनयादी ढांचे के निर्माण के लिए स्मार्ट नीतियों को लागू करना।

(ग) नीली अर्थव्यवस्था के उधयों में निवेश को बढ़ावा देना।

(घ) नीली अर्थव्यवस्था के बारे में जागरूकता बढ़ाना।[14]

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
August 2024
ISSN 2229-3388

नीली अर्थव्यवस्था के तीन स्तंभ

आर्थिक स्तंभ	सामाजिक स्तंभ	पर्यावरण स्तंभ
• समुद्री उद्योग • संसाधन दक्षता • सतत व्यापार पद्धतियाँ. • समृद्धि की राह पर आगे. बढ़ना • आर्थिक क्षमता का दोहन	• समुदायों को सशक्त बनाना • आजीविका • स्थानीय सहभागिता • सामाजिक समावेशिता • आजीविकाएँ सुरक्षित हों।	• जैव विविधता संरक्षण • पारिस्थितिक तंत्र का लचीलापन • पर्यापरण संरक्षण • लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण • मानवीय गतिविधियां

पूर्वी कैरेबियाई क्षेत्र की नीली अर्थव्यवस्था की प्रमुख चुनौतियां

पूर्वी कैरेबियाई क्षेत्र के छोटे द्वीपीय देशों के लिए नीली अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास का बहुत बड़ा माध्यम है। परन्तु इसे सफलतापूर्वक लागू करने तथा इसके लाभ आम जनता तक पहुंचाने में अनेक चुनौतियां है। जो इस प्रकार से हैं।

(क) इस क्षेत्र की सबसे बड़ी चुनौती जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएं हैं जिससे व्यापक स्तर पर यह क्षेत्र प्रभावित होता रहता है। ये देश अक्सर विनाशकारी महातुफानों और चक्रवातों से प्रभावित होता रहा है जैसे हरिकेन, आदि। ये तुफान तटीय बुनियादी ढाँचे, बन्दरगाहों और समुद्री पर्यटन को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। दूसरी ओर इस क्षेत्र में समुद्र का तापमान बढ़ने से कोरल रीफ नष्ट हो रहे हैं, जिसके कारण समुद्री जैव विविधता तथा मछली पकडने के उद्योग पर प्रत्यक्ष रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस संदर्भ में एक और संकट जिससे ये देश प्रभावित हो रहे हैं वह है सरगासम शैवाल का संकट। यह एक प्रकार का समुद्री सरगासम या भूरे रंग की काई है जो अपना जीवन महासगरीय सतह पर व्यतित करता है। परन्तु ये सतह पर भारी मात्रा में जमा हो जाते है जिससे मछुआरे नाव चलाने में असमर्थ हो जाते है जिसके कारण पर्यटन उद्योग पर नकारात्मक प्रभाव पडता है।

(ख) इस क्षेत्र की नीली अर्थव्यवस्था की हमरी मुख्य चुनौती पर्यटन पर अत्यधिक निर्मिरता है। इस क्षेत्र में पर्यटन के माध्यम से ही लोग अपना भरण पोषण करते हैं क्योंकि इसमें इतनी व्यक्तिगत पूंजी नहीं लगानी पडती है। इस निर्भरता के कारण नीली अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों जैसे समुद्री जैव प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय उर्जा या मच्छली पालन उद्योग हो, का विकास एवं विस्तार नहीं हो पा रहा है। यदि किसी प्रकार का वैश्विक संकट या महामारी आती है, तो यहाँ की अर्थव्यवस्था पूर्णरूप से प्रभावित हो जाती है।

(ग) कमजोर प्रशासन एवं संसाधनों की कमी मी यहां की प्रमुख चुनौति है। इस क्षेत्र को विकसित करने तथा जनसाधारण को लाभ पहुंचाने के लिए अनेक कानून एवं नितियों का निर्माण किया गया है परन्तु इन नीतियों और योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए या तो सरकारों के पास कोई प्रबन्धन व्यवस्था नहीं है या फिर समुन्द्री क्षेत्र में निगरानी करने के लिए सुरक्षा बल नहीं हैं। इससे समुद्री संसाधनों का व्यापक रूप से प्रयोग करने तथा लोगों के लिए लाभप्रद बनाने के लिए वैज्ञानिक तकनीक तथा स्थानिय स्तर पर इस क्षेत्र के वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की भारी कमी. है। अतः इस संदर्भ में ये द्वीपीय देश बाहरी और दीपपूजी की राष्ट्रों या अन्य क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों पर निर्भर रहते हैं।

(घ) इस क्षेत्र के देशों की सबसे बड़ी चुनौति समुद्री प्रदुषण है। पर्यटन और तटीय क्षेत्रों में होटल निर्माण और प्लास्टिक कचरे के सही निस्तारण तया प्रबंधन की व्यवस्था न होने के कारण हजारों टन कचरा समुद्र में समा जाता है जिसके कारण, इसका नकारात्मक प्रभाव समुद्री जीव जन्तुओं तथा मानवीय पहलुओं पर पड़ता है। जब यहाँ के लोग समुद्र से

प्राप्त भोजन ग्रहण करते हैं तो उनको अनके समास्याऐं होनी प्रारम्भ हो जाती है। प्रतिव्यक्ति प्लास्टिक प्रदुषण के मामले में पूर्वी कैरिबियाई देश दुनियां में अग्रणिय होते जा रहे हैं।[15]

(ङ) एक अन्य चुनौति जिससे पूर्वी कैरिबियन क्षेत्र प्रभावित हो रहा है वह है इस समुद्री क्षेत्र में अत्यधिक मत्स्य दोहन । अत्यधिक मच्छली पकड़ने से पर्यावरण अर्थव्यवस्था. और समाज पर कई गंभीर और नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। जब किसी एक प्रजाति को बहुत अधिक मात्रा में पकड लिया जाता है तो पूरी खाद्य श्रृंखला बिगड, जाती है। विशेष रूप से जो स्थानीय मछुआरे होते हैं उनकी आजीविका प्रभावित होती है। मच्छली पकड़ने के पारम्परिक तरीकों में लगे छोटे मछुआरों को अब मच्छली पकड़ने के लिए समय और ईंधन दोनों ही अधिक खर्च करना पडता है इससे उनकी लागत अधिक बढ जाती है। समय और पैसा अधिक लगने के यहां के मच्छुआरों में एक अविचिछन्नता का भाव उत्पन्न होता है। जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। अनुसंधान इस तथ्य को दर्शाते है कि अत्यधिक मच्छली पकड़ने से महासागरों का लचीलापन कम होता है तथा यह कार्बन भंडारण पर असर डालता है।[16]

(ञ) वितीय एवं तकनीकी चुनौतियां भी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इन देशों की अर्थव्यवस्थाएँ अपेक्षाकृत छोटी हैं इसके साथ ही उन पर विदेशी कर्ज का भारी बोझ है। समुद्री संरक्षण और संपोषणीय विकास के लिए तया इस क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए भारी निवेश की आवश्यकता होती है जोकि इनके पास नही है समुद्री संसाधनों के युक्तियुक्त मुल्यांकन, मैपिंग, समुद्र में वैज्ञानिक अनुसंधान पर्याप्त तकनीकी बुनियादी ढांचा और विशेषज्ञों का अभाव है। यद्यपि इस संदर्भ में ज्ञान साझा करने, तकनीकों स्थानांतरण तथा सामाजिक और आर्थिक रूप से दक्षिण–दक्षिण सहयोग के माध्यम से अनेक पहल भी की गई हैं परन्तु इन देशों के रणनीतिक हित पारस्परिक रूप से टकराते है जिसके कारण इस संदर्भ में कोई ठोस प्रगति नहीं हो पाती है और यदि उत्तर–दक्षिण सहयोग की बात करें तो वहां पर फिर वही समान व्यवहार तथा राष्ट्रीय शक्ति संरचनाओं की भिन्नता सामने आती है। जिसके कारण विकसित राष्ट्रों की इच्छानुसार चलना पड़ता है और विकासशील देशों को लाभ की अपेक्षा नुकसान होता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण मैक्सिको को देख सकते हैं।[17]

निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ

इस संपूर्ण अध्ययन से पता चलता है कि पूर्वि फेरिबियन क्षेत्र मे आईसीए रणनीतियों, क्षेत्रीय महासागर नीति और राष्ट्रीय नीली अर्थव्यवस्था रोडमैप के माध्यम से नीली अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के लिए एक ढोस नीतिगत आधार पहले से ही तैयार कर लिया गया है। पूर्वी कैरेबियाई राज्यों के संगठन द्वारा इस संदर्भ में नीली अर्थव्यवस्था से संबन्धित विभिन्न पहल एवं रणनीतियों का उददेश्य इस क्षेत्र में निवेश और एक अनुकरणीय आदर्श स्थापित करना है। जिसका सपष्ट संदेश यह है कि नीली अर्थव्यवस्था को केवल एक पर्यावरणीय विचार के रूप में नहीं बल्कि एक प्रमुख विकास पथ के रूप में देखा जाए। इससे पूर्वी कैरिबियाई क्षेत्र में नीली अर्थव्यवस्था की योजना जलवायु परिवर्तन से निपटने की क्षमता, आजीविका और आर्थिक विविधीकरण से गहराई से जुडी हुई है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, पूर्वी कैरिबियन क्षेत्र में नीली अर्थव्यवस्था को पर्यटन, मत्सय पालन, जैव विविधता, परिवहन, नवीकरणीय उर्जा और अपशिष्ट प्रबंधन के माध्यम से सतह विकास का मार्ग प्रशस्त करती है विश्व बैंक और आईसीएस जैसे संगठनों के द्वारा की गई पहल भी इस ओर ईशारा करती है कि क्षेत्रीय परियोजनाओं का उपयोग महासागरीय शासन को मजबूत करने और नीली अर्थव्यवस्था में निवेश करने के लिए किया जा रहा है। यद्यपि इस संदर्भ में क्षेत्रीय स्तर पर नीतियां और रणनीतियां व्यापक रूप से मजबूत हैं तथापि अनेक देशों को तकनीकी क्षमता, वित्तपोषण, डेटा संग्रह और अन्त क्षेत्रीय समनव्य में कमियों का, सामना करना पड़ रहा है। जहां तक अनुसंधान अंतराल की बात है तो पूर्वी कैरिबियाई क्षेत्र के अधिकांश देशों पर अलग–अलग विस्तृत अध्ययन नही हुआ है अधिकांश शोध संपूर्ण कैरिबियाई क्षेत्र को एक इकाई मानकर किए गए हैं। दूसरे पूर्वी कैरिबियाई देशों द्वारा अपनाई गई नीली अर्थव्यवस्था से संबन्धित नीतियों और परियोजनाओं की प्रभावशीलता पर पर्याप्त मूल्यांकन नही हुआ है। तीसरे, छोटे द्वीपों में नीली अर्थव्यवस्था के विकास के लिए वितपोषण प्रतिमानों पर कम काम हुआ है यद्यपि संयुक्तराष्ट्र विकास कार्यक्रम अभीकरण ने इस संदर्भ में प्रगति को रेखांकित किया है परन्तु फिर भी इस क्षेत्र को मिश्रित वित्त, सार्वजनिक रूप से व्यक्तिगत भागीदारी और निवेश को स्थाई रूप से बढ़ाने वाले तन्त्रों पर गहन शोध कार्य की आवश्यकता है। इस शोध पत्र की कुछ सीमाएँ भी हैं जैसे उपयुक्त शोध समस्या के संदर्भ में नीतिगत दस्तावेजों, संस्थागत प्रतिवेदनों और परियोजना सारांशों पर निभिर करता है न कि जमीनी स्तर पर किए गए प्राथमिक कार्यों पर। दूसरा नीली अर्थव्यवस्था एक

व्यापक अवधारणा है जो एक साथ कई क्षेत्रों को शामिल करती है जिनमें मत्सय पालन, पर्यटन, समुद्री परिवहन जैव विविधता, अपशिष्ट प्रबंधन और नवीकरणीय उर्जा शामिल है। इस व्यापक क्षेत्र के कारण, एक ही अध्ययन हर क्षेत्र को समान गहराई से कवर नहीं कर सकता

अनुशंसाएँ: इस शोध पत्र के व्यापक अध्ययन, परियोजानों, कमियों, तथा सिमाओं के आधार पर प्रमुख अनुशंसाएँ प्रस्तुत की गई हैं।

(क), इन राष्ट्रों में नीली अर्थव्यवस्था के संदर्भ में देश–विशेष एवं तुलनात्मक अध्ययन पर ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि प्रत्येक देश की अवस्थिति एवं आवश्यकताओं के अनुरूप नीतियां बनाई जा सकें।

(ख) इस क्षेत्र में बसे सभी देशों को क्षेत्रीय तथ्य प्रणालियों महासागरों से संबन्धित लेखा उपकरणों और निगरानी ढाँचो को मजबूत करना चाहिए ताकि नीली अर्थव्यवस्था की पहलों का अधिक विश्वसनीय तरीके से मूल्यांकन किया जा सके। इन देशों को अपनी राष्ट्रीय विकास योजनाओं को नीली अर्थव्यवस्था के रोडमैप के साथ संरेखित करना चाहिए, क्योंकि आईसीएस संगठन की रणनीति इस बात पर बल देती है कि इसके कार्यान्वयन को व्यापक विकास नीति की मुख्यधारा में शामिल किया जाना चाहिए।

(ग) विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थाओं का नियमित मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि विभिन्न देशों के व्यापक अवसरो के संदर्भ में शोध कार्य किया जा सके। इस संदर्भ में बहुविषयक शोध को प्रोतसाहित किया जा सकता है।

(घ) स्थानीय समुदायों, महिलाओं और युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि समावेशी नीली अर्थव्यवस्था विकसित की जा सके।

पूर्वी कैरिबियाई क्षेत्र में नीली अर्थव्यवस्था अप्पार संभावनाएँ रखती हैं जैसे मत्स्य पालन, नवीकरणीय उर्जा, गोताखोरी और समुद्री मनोरंजन, ज्वारीय पायलट परियोजनाएं आदि। ये अवसर सतत विकास को बढ़ावा देते हैं। परन्तु इसके प्रभावी विकास के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान, विश्वसनीय डेटा, क्षेत्रीय सहयोग, जलवायु – अनुकूल नीतियाँ तथा समावेशी शासन व्यवस्था आवश्यक है। अतः उपर्युक्त शोधअंतरालों को दूर करने के लिए तथा अनुशंसाओं को लागू करने से यह क्षेत्र आर्थिक विकास, पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक समावेशन के मध्य संतुलित एव दीर्घकालिक नीली अर्थव्यवस्था का सफल प्रतिमान विकसित कर सकता है। और नीली अर्थव्यवस्था इस क्षेत्र के दीर्घकालिक विकास की एक प्रभावी एवं टिकाऊ रणनीति सिद्ध हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थरू

1 "पूर्वी कैरिबियन क्षेत्र में सतत महासागर प्रबंधन," *पूर्वी कैरिबियन राज्यों का संगठन* ब्लाग.

2 वही तथा पवन जी. पाटिल तथा अन्य, "ब्लू इकॉनमी की ओर : टिकाऊपन का वादा कैरिबियन में विकास", *रिपोर्ट : विश्व बैंक समूह* प्रतिवेदन संख्या : एयूएस 16344. सितम्बर 2016,

3 कोर्टनी जानसन, "ब्लू इकोनामी क्या है।" *रेजोनेंस ग्लोबल,* 14 अगस्त 2024.

4 एस. स्मिथ– गाडले, "नीली अर्थव्यवस्था को परिभाषित करना, *भारतीय राष्ट्रीय समुद्री मामलों की पत्रिका,* 31 मई 20160 पृ० 3.

5 इसकी विस्तृत परिभाषा और अवधारणात्मक अध्ययन के लिए विश्व बैंक प्रतिवेदन का अध्ययन कर सकते हैं।

6 "नीली अर्थव्यवस्था की परिभाषाएं" *संयुक्त राष्ट्र संघ का दस्तावेज,* आधिकारिक वेबस्थल

7 वही तथा संबन्धित संस्थान की आधिकारिक वेबस्थल पर जा सकते है।

8 वही, कंजर्वेशन इंटरनेशनल के ब्लाग देख सकते हैं।

9 वही

10 वही

11 सोफी बर्ताजो, आखिर ब्लू इकोनामी क्या है" *कंजरवेशन इंटरनेशनल,* 7 मार्च 2016. इसके संदर्भ के लिए लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स एण्ड पालिटिकल साइंस की वेबस्थल पर परिक्षण कर सकते हैं।

12 अल्वारो. डे ला माजा, "द ब्लू इकॉनाम रू डेफिनेशन, अपार्डेनीतिज प्राब्लम्स," *एनीनवंन* के ब्लागय पर इनका लेख देख सकते हैं। "ब्लू इकॉनामी डिवलेपमेंट फ्रेमवर्क" *विश्व बैंक की रिपोर्ट,* अप्रैल 2016. प्र० 7.

13 कैरेबियन बायोडायवर्सिटी फण्ड ब्लागमें प्रकाशित "कैरिबियन ब्लू इकोनामी फाइनेंसिंग (कैरिबियन ब्लूफिन) परियोजना, तथा मैट जैनकिंस और सेन ग्रोस", ओशियन अपार्टिनीतिक, *द नेचर कंजरवेंसी,* फॉल, 2023. इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय विकास से संबन्धित योजनाओं के संदर्भ में आप पवन जी. पाटिल तथा अन्य विज्ञानों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट "टूवर्डस ए ब्लू ए ब्लू इकोनामी : ए प्रोमिस फॉर सस्टेनेबल ग्रोथ इन द कैरिबियन," विश्व बैंक, प्रतिवेदन संख्या एयूएस 16344, सितम्बर 2016 देख सकते हैं।

14 "न्यू रिपोर्ट आईडेंटिफाईस की अपोर्टिनीतिज टू बुस्ट ग्रोथ इन द कैरिबियन सी व्हाईल प्रीजर्विन्ग इट्स इकोसिस्टम," *विश्व बैंक प्रतिवेदन* 13 सितम्बर 2016.

15 टिप्पणी संख्या 12. तथा विंस्टन मूर, वेन इलियट और ट्राय लार्ड, "जलवायु परिवर्तन, अटलांटिक तुफानों की गतिविधि और कैरिबियन क्षेत्रीय सामाजिक–आर्थिक प्रभाव", *एनवायर्मेंट डिवलपमेंट एण्ड सासटेनेबिलीटी,* खण्ड–19, 1 फरवरी 2016. पृ 110–125. जॉन डिक्सन और अन्य, "कैरिबियाई क्षेत्र में पर्टन और पर्यावरण, एक आर्थिक ढाँचा," *विश्व बैंक प्रतिवेदन* संख्या 80, जनवरी 2001. "डिवलेपमेंट चेलेंजिज इन दी कैरेबियन," *कैरिबियन रिजन क्वाटर्ली बुलेटिन,* वाल्यूम 7, सांख्या 3, सितम्बर 2018. पृ. 3–25. कैरिबियन क्षेत्र में समुद्री प्रदुषण, के संदर्भ के लिए देखें। एस.एस डाईज तथा पवन पाटिल, मारिन पालुशन इन द कैरिबियनः नाट ए माईनूट टू वेस्ट" विश्व बैंक, पूर्वी कैरिबियाई राज्यों का संघ तथा संयुक्त राष्ट्र की कैरिबियाई पर्यावरणीय कार्यक्रम अभिकरण द्वारा तैयार प्रतिवेदन

16 डैनियल पॉली, और डर्क जेलर, मछली पकड़ने के आंकड़ो के विश्लेषण से पता चलता है कि वैश्विक समुद्र मतस्य पालन में पकड़ी गई मछलियों की संख्या रिपोर्ट की गई मात्रा से अधिक है और इसमें गिरावट आ रही है" *नेचर कम्यूनिकेशन,* खण्ड 7, संख्याः 10244, 19 जनवरी 2016.

17 जैकलीन लांगाड़िया मार्टिनेज, *द लैटिन अमेरिकी और कैरिबियन देशों में दक्षिण–दक्षिण सहयोग का मूल्यांकन,* संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन, सैंटियागो, 2021.